RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

[illegible] • अंक-02 • त्रैमासिक • अप्रैल-जून, 2017

A Peer Reviewed Research Quarterly

Scanned with CamScanner

जैन अर्द्धमागधी आगमों में अलंकार

समणी संगीत प्रज्ञा

आगमवाणी अंतःकरण से उठी आवाज है। पवित्र अन्तःकरण से स्फूर्त वाणी में हृदय-पक्ष प्रधान होता है। यही कारण है आर्ष-वाणी आगम को श्रेष्ठ कहा जाता हैं। आर्ष-वाणी की विशेषता है कि यह सीधी व्यक्ति के हृदय को छूती है, उसके कण-कण में व्याप्त होकर उसे भी शीघ्र पावन सामर्थ्य से युक्त बनाती है। अतः आर्षवाणी-आगम में अनेक रमणीय काव्य संपदाओं का उपयोग किया गया है। रस, गुण, अलंकार, रीति, छंद, बिम्ब, प्रतीक, सौन्दर्य आदि काव्यात्मक सरणियों की उपस्थिति आगम साहित्य में हमें प्राप्त होती है।

प्रकृति अपने आवरण को सजाने-संवारने में नित्य नवीन रूप धारण करती है। साहित्यकार प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करने वाला प्राणी है। वह न केवल अपने बाह्य रूप को सुन्दर बनाने के लिए श्रृंगार आदि का प्रयोग करता है किंतु अपनी विचारात्मक अभिव्यक्ति को भी सुन्दर तथा मनोरम बनाने के लिए अलंकारों की सहायता लेता है। काव्य में शब्दगत एवं अर्थगत चमत्कार उत्पन्न करने में अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अलंकार साहित्य का प्राण है। अतः आगम साहित्य में प्रभूत मात्रा में अलंकारों का विनियोजन हुआ है। इसमें श्लेष, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, काव्यलिंग, दीपक, परिकर, स्वभावोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, विरोध आदि अनेक अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

अलंकार- अलंकार साहित्य का प्राण है। जिसके द्वारा साहित्यिक कथन के बाह्यशोभा का संवर्द्धन होता है, उसे अलंकार कहते हैं। आचार्य मम्मट ने लिखा है-

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽगंद्वारेण जातुचित्।[1]

हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।

अर्थात् जो शब्दार्थ साहित्य की शोभा का संवर्द्धन करते हैं, वे शरीरशोभा संवर्द्धक हार आभूषणों के समान अनुप्रास उपमादि अलंकार हैं।

पंडितराज जगन्नाथ ने व्यंग्य की रमणीयता को बढ़ाने वाले को अलंकार कहा है-

काव्यात्मनो व्यंग्यस्य रमणीयता प्रयोजका अलंकाराः।[2]

Scanned with CamScanner